"मीरा के काव्य में जन चेतना"

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय अजमेर
पी–एच.डी. की उपाधि हेतु प्रस्तावित
शोध प्रबन्ध की रूपरेखा

शोध निर्देशक
डॉ. हरप्रकाश गौड़
(वरिष्ठ व्याख्याता)
हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

शोधार्थी
सोहनराम

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

सत्र – 2012

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर–
पी–एच.डी.
उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध –प्रबन्ध की रूपरेखा

1. शोधार्थी का नाम (हिन्दी में)	:–	सोहन राम
Name of Scholar (In English)	:–	Sohan Ram
2. शोध विषय (हिन्दी में)	:–	मीरा के काव्य में जन चेतना
Title of the Research Work (In English)	:–	Public Awareness In Poetry of Meera

3. शोध कार्य स्थल (Location):–

प्रस्तावित शोध कार्य के लिए मैंने राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय अजमेर को चुना है। मेरे शोध निर्देशक डॉ. हरप्रकाश गौड़ इसी महाविद्यालय में वरिष्ठ व्याख्याता–हिन्दी विभाग में कार्यरत है तथा अजमेर विश्वविद्यालय से शोध निर्देशक के रूप में पंजीकृत हैं। यह महाविद्यालय विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और राज्य सरकार द्वारा आदर्श महाविद्यालय की सूची में भी स्वीकृत है तथा यहाँ शोध करने सम्बन्धी सभी प्रकार की मूलभूत सुविधाएँ भी उपलब्ध हैं।

अतः इन सभी कारणों से मेरे द्वारा प्रस्तुत महाविद्यालय को शोध के लिए चुना गया है।

4. प्रस्तावित शोध कार्य का प्रमुख उद्देश्य:–
(Main Objective of the research work)

1. मीरा के काव्य में जन चेतना को दर्शाना।
2. मीरा के काव्य का व्यक्तित्व और कृतित्व का अध्ययन एवं परिचय करना।
3. तत्कालीन जनसंस्कृति का चित्रण करना।
4. मीरा के काव्य में तत्कालीन सामाजिक विसंगतियों का अध्ययन करना।
5. मीरा के काव्य में महिला उत्पीड़न के निवारण प्रयासों का चित्रण करना।
6. भारतीय संस्कृति के अनुरूप मीरा की भक्ति भावना का अध्ययन करना।
7. मीरा पर समकालीन परिवेश और समाज के प्रभाव को दर्शाना।
8. मीरा की सामाजिक चेतना का वर्णन करना।
9. जीवन, साहित्य, और भक्ति के रूप में मीरा काव्य का अध्ययन करना।

प्रस्तावित शोध कार्य का महत्त्व :–

(Importance of proposed research work)

मध्यकालीन भक्ति आन्दोलन अपने आप में एक युगांतरकारी काल का द्योतक है। वर्तमान हिन्दी का जन्म जहाँ इस काल की प्रमुख उपलब्धि है, वही आध्यात्म को अलौकिक से लौकिक बनाना इस की वास्तविक और अद्वितीय उपलब्धि है। इस काल से पूर्ववर्ती काल का आध्यात्मिक जगत् जहाँ सकीर्ण एंव कठोर वर्ण व्यवस्था से जकड़ा हुआ था तथा ईश्वरीय तत्व एक विशिष्ट वर्ग की बपौती बना हुआ था, मध्यकालीन धार्मिक आन्दोलन उसे आमजन तक लाने में न केवल सक्षम हुआ, बल्कि इसने लगभग बिखरने के कगार पर पहुँच चुके भारतीय समाज को न केवल सम्भाला बल्कि पश्चिमी विधर्मी आन्दोलन से लड़ पाने में सक्षम बनाया इस बात में किंचित मात्र भी संदेह नहीं है कि अगर तत्कालीन धार्मिक सुधारवादियों ने इस दिशा में प्रयास न किए होते तो सम्पूर्ण प्राचीन सनातन धार्मिक सभ्यता को न केवल भयंकर आघात पहुँचता बल्कि इस्लामी धार्मिक प्रचार की आँधी इसको नष्ट ही कर देती। इस्लामी धार्मिक आन्दोलन विश्वस्तर पर अपने कट्टरपन और प्रखर विस्तारवादी भावना के लिए कुख्यात रहा। यूरोप से लेकर सुदूर–पूर्वी एशिया तक इसका व्यापक प्रसार हुआ परन्तु भारतीय तत्कालीन परिवेश में यह केवल राजनीतिक शासन तक ही सीमित रहा परन्तु सामाजिक परिदृश्य पर इसका प्रभाव अत्यन्त सीमित रहा न केवल सीमित रहा बल्कि यह भारतीय संस्कृति से स्वयं ही प्रभावित दृष्टिगोचर हुआ।

तत्कालीन मध्यकालीन आन्दोलन के प्रमुख प्रणेता के तौर पर हम कबीर, तुलसी, सुरदास, रामानन्द वल्लभाचार्य, मीरा आदि का स्मरण कर सकते हैं। यह भक्ति आन्दोलन दो शाखाओं में विभक्त किया जा सकता है – सगुण भक्ति धारा एवं निर्गुण भक्ति धारा निर्गुण भक्ति धारा के प्रवर्तकों में कबीर और सूफी सम्प्रदाय शामिल है वहाँ उक्त अन्य सभी सगुण भक्ति शाखा से जुड़े हुए थे।

सगुण भक्ति धारा से जुड़ी साध्वी मीरा इन सब में विशिष्ट एवं विलक्षण मानी जाती है। एक ओर जहाँ अन्य सभी संत आध्यात्म और तत्कालीन जनसमस्याओं यथा जातिवाद, धार्मिक कट्टरवाद पोंगापंथ और कर्मकाण्ड सब कुरीतियों का विरोध करते रहे वहीं मीरा न केवल इन सब कुरीतियों का पुरजोर विरोध करती रही बल्कि इन से इतर उस समस्या की ओर जनसाधारण का ध्यान दिला पाने में पुर्णतया सफल रही कि किस प्रकार समाज में

महिलाएँ सदैव शोषित अबला और स्वयं ही अपने वर्ग की शोषक के रूप में रही हैं। यह समस्या इस काल मे ही नहीं वरन् आधुनिक काल में भी शाश्वत और जस ही तस बनी हुई है, यह मीरा की दूरदृष्टि का एक स्वयंसिद्ध उदाहरण हैं।

राजस्थान की मरूभूमि में भक्ति की भागीरथी प्रवाहित करने वाली मीरा का नाम हिन्दी साहित्य में गौरवपूर्ण महिमा से मण्डित हैं। मीरा जोधपुर के संस्थापक राव जोधाजी की प्रपौत्री, मेड़ताधीश राव दूदा की पौत्री और वीरवर राठौड़ रतनसी की पुत्री थी जिसका विवाह चितौड़ के प्रख्यात महाराणा सांगा के पुत्र भोजराज के साथ किया गया। मेड़तिया राठौड़ शाखा में जन्मी मीरा को वैष्णव भावना के संस्कार पैतृक परम्परा के रूप में प्राप्त हुए। मीरां के पितामह राव दूदा और बड़े पिता वीरमदेव का आत्मज वीर शिरोमणि राव जयमल परम् वैष्णव भक्त थे। एक और जहाँ राव दूदा और उनके सुयोग्य वंशज राव वीरमदे राव जयमल मेड़ता में अपना स्वतन्त्र राज्य स्थापित करना चाहते थे वहीं जोधपुर का राव मालदेव मेड़तिया राठौड़ों को अपने अधीन बनाये रखने के लिए प्रयत्नशील था। परिणामतः दोनों के बीच लडाइयों का दौर प्रारंम्भ हुआ। इसका प्रभाव मीरा के जीवन पर पड़े बिना नहीं रहा और इन घटनाओं से समय–समय पर मीरा के जीवन को नया मोड़ दिया।

मीरा सगुण भक्ति की वह दीपशिखा है जिसमें आचार्य रामानुज, गौरांग, चैतन्य महाप्रभु, जयदेव, चण्डीदास, वल्लभाचार्य जैसे भक्त साधकों की भक्ति रस की आलोकमयी किरणें सतरंगी होकर बिखरती रहती हैं। भावात्मक एकता की प्रतीक मीरा ने देश की नैतिकता ओर संस्कृति को अपनी भक्ति के माध्यम से एक नया मोड़ दिया। उसका चारू चरित्र अनन्य प्रभु प्रेम अनुपम भक्ति साधना माधुर्य एवं ज्ञान की अभिव्यक्ति रहा है। मीरा का व्यक्तित्व ओर उसकी भक्ति उनके पदों में झलकती हैं।

मीरा ने अपने काव्य में काम, क्रोध, लोभ, मोह और अंहकार आदि अवगुणों का विरोध किया है वे तो सच्चे मानवीय गुणों की स्थापना करके संसार को ही धरती का स्वर्ग बनाने की चेष्ठा की जहाँ न कोई छोटा–मोटा हो और न ही ऊँच नीच जैसा मिथ्या भेदभाव। वे सच्चे अर्थो में वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना की प्रबल समर्थक थी सांसारिक नश्वरता का प्रदर्शन कर पथभ्रष्ट मनुष्यों को अपनी असलियत पहचानने की प्रेरणा देती है। उनका स्वर निराशावादी नहीं बल्कि आशावादी है वे धार्मिक सामाजिक आडम्बरों का कड़े रूप में विरोध करती हैं।

मीरा को नारी सामाजिक चेतना की पुरोधा की संज्ञा से सम्बोधित किया जा सकता है। मध्यकालीन जोधपुर के राठौड़ तथा मेवाड़ के सिसोदिया राजवंश में सती प्रथा की परम्परा प्रचलित थी परन्तु विधवा होने के पश्चात मीरा ने सती होना अस्वीकार करके स्पष्ट रूप से कहा कि –

''भजन करस्यां सती न होस्या
मन मोह्यो छग नामी''

16 वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में विधवा मीरा द्वारा सती होने से स्पष्ट रूप से इनकार करना भारत के सामाजिक इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण युग की परिवर्तनकारी घटना थी। कालान्तर में लार्ड विलियम बैंटिक ने 1829 ई ने सती प्रथा को अवैध घोषित किया। सती प्रथा के निषेध से मीरा ने न केवल विधवा नारियों को जीवन का मानव अधिकार प्रदान किया बल्कि वैधव्य जीवन को आध्यात्मिक साधना की दिशा प्रदान की।

मध्ययुगीन भक्ति आन्दोलन मुख्यतः पुरूष प्रधान था किसी भी नारी के लिए सामाजिक मर्यादाओं एंव रूढ़ियों के उस युग में सार्वजनिक रूप से भक्ति मार्ग को अंगीकार करना लगभग असंभव था परन्तु मेवाड़ की राजवधू मीरा ने केवल परम्परागत पर्दा प्रथा का उल्लंघन किया बल्कि भक्ति आन्दोलन के प्रमुख संतों में प्रतिष्ठित किया। भक्ति भगवती मीरा के भक्ति पद उस के जीवन काल में ही प्रांतीयता का सीमोल्लंघन करके अखिल भारतीय स्तर पर लोकनिधि के अभिन्न अंग बन चुके थे।

मीरा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व ने यह सिद्ध कर दिया कि नारी अबला न होकर सबला है वह प्रथम श्रेणी में कीर्तिमान स्थापित कर सकती है। वह आध्यात्मिक साधना के क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित कर सकती है। मीरा की इसी ध्येय साधना करते हुए स्पष्ट शब्दों में कहा –

''पग घुंघुरू बांध मीरा नाची रै।

उसने तत्कालीन धार्मिक व्यवस्था को चुनौती देते हुए किसी भी संत अथवा आचार्य को अपना गुरू नहीं बनाया।

मीरा एक विद्रोही नारी के रूप में सामने आती है उसने सामने आती है उसने सामाजिक तथा धार्मिक रूढ़ियों को तोड़ते हुए जीवन, साहित्य ओर भक्ति इन तीनों ही क्षेत्रों में एक क्रांतिकारी युगदृष्टा अथवा युगसृष्टा नारी की भूमिका निभाई है उसने वृन्दावन

में जीव गोस्वामी के स्त्रियों का मुख न देखने का प्रण को तुड़वाकर अपने आध्यात्मिक चुम्बकीय व्यक्तित्व का परिचय दिया।

मीरा के पुर्व मध्यकालीन भक्ति परम्परा में कई कवयित्रियाँ रही जिनमें दयाबाई सहजोबाई तथा मीराबाई का अल्लेख है किन्तु महत्वपूर्ण यह है दयाबाई और सहजोबाई सन्त तथा निर्गुण उपासना थी और मीरा सगुण उपासक।

दयाबाई व सहजोबाई वर्तमान में धुमिल हो चुकी है किन्तु मीराबाई का नाम राजस्थान के जनमानस के हृदय में सर्वत्र विद्यमान है।

मीरा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व नारी सामाजिक चेतना का साकार रूप हैं नारी जाति की समाजिक वेदना की अभिव्यक्ति है मीरा भक्ति आन्दोलन की देन है भक्ति आन्दोलन के मुख्यतः तीन उद्देश्य थे पहला हिन्दुओं में सामाजिक धार्मिक सुधार दूसरा हिन्दू मुस्लिम एकता अथवा समन्वय ओर तीसरा इस्लाम के आक्रमण से भारतीय संस्कृति और अस्मिता की रक्षा करना। निःसन्देह गुरू नानक, गुरू अर्जुनदेव, संत तुकाराम, संत रामदास आदि के समय भक्त मीरा के व्यक्तित्व कृतित्व ने राजपुताने के उन युद्ध शासकों को प्रेरणा प्रदान की जिन्होने मुस्लिम आक्रमणकारियों का सतत् सैन्य प्रतिरोध करते हुए भारतीय धर्म और संस्कृति की रक्षा की।

मीरा का सम्पूर्ण व्यक्तित्व एंव कृतित्व ही भावी पीढ़ियों के लिए विरासत और अभिप्रेरणा है उसने भक्ति के दर्शन का प्रस्तुतीकरण करके अन्तः प्रेरक भक्ति साहित्य का सजृन किया जो लगभग 500 वर्षो के गीतों के समान भारत की लोकात्मा में जीवित है।

मीरा ने यह सिद्ध कर दिया कि भारत की आत्मा किसी पुरातात्विक अवशेष में नही बल्कि यहाँ की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक प्रेरणाओं में है

मीरा के साहित्य का सम्बन्ध समसामयिक युग से होता है और अगर बात साहित्य सजृन की हो तो स्पष्ट है कि इस पर तत्कालीन परिस्थितियों का प्रभाव अवश्य ही पडेगा साहित्यकार स्वयं परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त करता है समाज मे बढ़ रही समस्याएं संत्रास और पीडाएं हो तब तो साहित्य की विशेष रूपेण काव्य की जिम्मेदारी बढ़ जाती है इस दृष्टि से इस शोध कार्य से मूल्यांकन निष्कर्ष प्राप्त होंगे।

मीरा के काव्य में जनचेतना के प्रति प्रबुद्ध पाठकों एंव शोधार्थियों की रूचि जाग्रत हो सकेंगी ऐसे मौलिक शोधों की और अन्य शोधार्थियों का ध्यान आकृष्ट होगा।

5. साहित्य समीक्षा :—

(Review of Litterature)

अतीत के संचित ज्ञान के आधार पर भी नवीन ज्ञान का सजृन किया जाता है एवं उनके आधार पर शोध परियोजना की दिशा निर्धारित की जाती है शोध को गति प्रदान करने के उद्देश्य से वैचारिक पोषण की आवश्यकता होती है अतः सन्दर्भ में शोध परियोजना की समीक्षा आवश्यक है।

पूर्व में मीरा पर स्वीकृत शोध कार्यो में प्रमुख रूप से राज, वि, वि, जयपुर के हिन्दी विभाग से शोध रजनी शर्मा जिनके निर्देशक प्रो. विनोद कुमार शर्मा थे इनका शोध विषय ''मीरा साहित्य के सामन्त विरोधी मूल्य'' था इन्होने मीरा पर एम. फिल. शोध कार्य किया।

मीरा पर शोध कार्यो में राज. वि. वि. जयपुर के शोध कर्ता अशोक धवन जिनके निर्देशक प्रो0 नन्द किशोर पाण्डेय है। इसका शोध विषय ''मीरा के काव्य में भक्ति और सामाजिक परिवर्तन की चेतना'' पर एम. फिल. किया है।

इसी प्रकार डॉ. प्रभात ने ''मीराबाई शोध प्रबन्ध'' के अन्तर्गत मीरा के उज्ज्वल जीवन परिदृश्य पर प्रकाश डाला।

उपर्युक्त सभी विद्वानों ने मीरा के विभिन्न पहलुओं पर अध्ययन किया परन्तु समग्र रूप से मीरा की जन चेतना उसकी महत्ता का अभाव इन सभी ग्रंथों में पाया जाता है इन सभी विद्वानों के द्वारा मीरा के काव्य मे जन चेतना पर यथा–कथा का ही वर्णन किया गया है जो अपूर्ण है जो वर्तमान सम्पर्क जोड़ने में भी ध्यान नहीं दिया गया हैं और लम्बे अन्तराल के बाद भी ध्यान नही दिया गया है।

6. शोध रिक्तता :—

(Research Gaps)

पुर्ववर्णित पुस्तकों तथा शोध प्रबन्धों का अध्ययन करने के पश्चात् मैंने पाया कि मीरा के जन चेतना सम्बन्धी तत्व पर पूर्ण रूप से साहित्य प्रेमियों की नजर सूक्ष्म रूप से नहीं गई। आत्ममंथन तथा मित्रों एवं प्रबुद्धजनों के साथ विमर्श करने के तत्पश्चात् मैंने पाया कि

में मीरा के काव्य में जन चेतना के तत्त्वों को अगर छात्रों तथा शोधार्थियों के मध्य रखा जाये तो काफी उपयोगी एवं श्रेयस्कर सिद्ध होगा।

अतः इस विषय पर शोध करना अधिक महत्त्वपूर्ण समझा गया है मेरे शोध अध्ययन का विषय ''मीरा के काव्य में जनचेतना'' पर सभी पहलुओं को उजागर करते हुए उसके विकास, वर्तमान के महत्त्व को देखते हुए इसके विभिन्न स्वरूपों को रेखांकित करना है।

अतः मैंने मेरे गुरूवर डॉ. हरप्रकाश गौड़ राजकीय महाविद्यालय अजमेर को ''मीरा के काव्य में जन चेतना'' विषय सुझाया तो उन्होंने इसे रूचिपूर्ण तथा शोधपरक विषय बताते हुए शोध करने की स्वीकृति दे दी।

जहाँ तक मेरे ज्ञान तथा दृष्टिकोण के अनुसार किसी भी महाविद्यालय या विश्व विद्यालय में इस विषय पर शोध कार्य नहीं हुआ है मैं अपनी कठोर मेहनत व अनुसंधान परक नजर के माध्यम से सर्वश्रेष्ठ शोध प्रबन्ध प्रस्तुत करूंगा जिससे आने वाले शोध साहित्य प्रेमियों व विद्यार्थियों को लाभ पहुँचेगा।

7. परिकल्पना :–

(Hypothesis)

मीरा काव्य पर अब तक कई प्रकार के शोध कार्य न केवल भूत में वरन् वर्तमान में भी जारी है परन्तु उक्त काव्य में व्याप्त जनचेतना पर शोध की आवश्यकता व्यापक रूप से सदैव परिलक्षित होती रही हैं।

शोध अध्ययनार्थ प्रस्तुत शोध प्रबन्ध तात्कालीन सामाजिक वातावरण को लक्ष्य किया जायेगा, प्रस्तुतः विषय पर परिकल्पना संभव नही इस हेतु परिकल्पना नहीं दी जा सकती है।

8. प्रयुक्त शोध प्रविधि :–

(Research Methodology)

इस विषय के व्यापक एवं गहन अनुसंधान के लिए अनेक शोध प्रविधियों का प्रयोग किया जायेगा –

➢ निम्न आधार ग्रन्थ – 1. नरसी जी रो माहेरो
2. गीत गोविन्द की टीका
3. राग गोविन्द
4. सोरठ के पद
5. मीरा बाई की मलार
6. गर्वा गीत
7. फुटकर पद

1. राजस्थानी जन संस्कृति एवं मीरा चित्रित जन संस्कृति का तुलनात्मक अध्ययन
2. मीरा :– जन्मभूमि – कर्मस्थली का भ्रमण कर सामग्री एकत्र करना
3. मीरा के स्व अनुभूत ''नारी विमर्श '' का चित्रण
4. समकालीन हिन्दी साहित्य के मीरा सम्बन्धी विषय का अध्ययन किया जायेगी
5. इस हेतु विभिन्न विश्व विद्यालय के पुस्तकालयों, सार्वजनिक पुस्तकालयों तथा प्रकाशकों से यथा समय सम्पर्क किया जयेगा।
6. उपर्युक्त विषय का ज्ञान रखने वाले विद्वानों लेखकों एवं आलाचकों से व्यक्तिगत साक्षात्कार अनुसूचियों एवं प्रश्नावली के माध्यम से तथ्य एकत्र किये जायेंगे।
7. आकाशवाणी दूरदर्शन एवं इलेक्ट्रोनिक मीडिया के साधन से पत्र पत्रिकाओं का अध्ययन व इन्टरनेट के माध्यम से सामग्री संकलन का प्रयास किया जायेगा।
8. साहित्यक गोष्ठियों सम्मेलनों आदि में भाग लेकर तथ्य जुटाए जायेंगे।
9. साहित्य के अनुसंधान के लिए प्रभक्त प्रचलित सभी वैज्ञानिक शोध प्रविधियों द्वारा शोध को अंतिम रूप दिया जायेगा।

प्रस्तावित शोध प्रबन्ध की अध्याय योजना :–
(Tentative Chapter Scheme)

अध्याय 1 : भक्ति काव्य में जन चेतना

1. निर्गुण काव्य में जन चेतना
2. सगुण काव्य में जन चेतना
3. कृष्ण काव्य में जन चेतना
4. मीरा काव्य में जन चेतना

अध्याय 2 : मीरा का व्यक्तित्व एंव कृतित्त्व

1. मीरा का जीवन वृत – जन्म, विवाह, मृत्यु
2. मीरा का काव्य कृतित्व
3. मीरा की भक्ति भावना
4. मीरा के समय तात्कालीन परिवेश

अध्याय 3 : मीरा के काव्य में जन चेतना के तत्त्व

1. जन संस्कृति का चित्रण
2. जन परम्पराओं का चित्रण
3. समकालीन वातावरण
4. सामन्ती मानसिकता का विरोध
5. स्त्री चेतना
6. जन भाषा
7. तात्कालीन समाज
8. राजसत्ता और लोक सत्ता के मध्य समन्वय का अभाव
9. मीरा के द्वारा सामाजिक विसंगतियों का विरोध
10. मीरा का काव्य में जनवाद

अध्याय 4 : मीरा के काव्य में जन चेतना के तत्वों का विश्लेषण

1. भाव पक्षीय विश्लेषण
2. कला पक्षीय विश्लेषण
3. तद्युगीन वातावरण के अनुसार विश्लेषण
4. मीरा की जन चेतना का विश्लेषण

अध्याय 5 : मीरा की प्रासंगिकता

1. मीरा द्वारा तात्कालीन वातावरण में स्त्री व दलित परिस्थितियों का चित्रण।
2. मीरा के काव्य में स्वानुभूति
3. मीरा के काव्य का परवर्ती कवियों पर प्रभाव
4. जनमानस पर मीरा का प्रभाव
5. मीरा का हिन्दी साहित्य में योगदान एवं महत्त्व।

अध्याय 6 : उपसंहार

9. सहायक सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. **मीरा का काव्य,** लेखक – विश्वनाथ त्रिपाठी, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2001 ई.।
2. **मीरा ग्रन्थावली,** सम्पादक – कल्याण सिंह शेखावत, महाराज मानसिंह पुस्तक प्रकाशन शोध केन्द्र मेहरानगढ जोधपुर, प्रथम संस्करण, 2009 ई.।
3. **मीरा एक अध्ययन,** लेखक –परशुराम चतुर्वेदी, लोक सेवक प्रकाशक बनारस, प्रथम संस्करण, 2001 ई.।
4. **मीराबाई (जीवन चरित्र और आलोचना),** लेखक–डॉ. श्री कृष्ण लाल, काशी हिन्दी विश्वविद्यालय, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, प्रथम संस्करण,1988 ई.।
5. **मीरा की प्रेम–साधना,** लेखक –डॉ. भूवनेश्वर नाथ मिश्र 'माधव',राजमहल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1974 ई.।
6. **मीरा की भाषा,** लेखक –डॉ. शशि प्रभा, स्मृति प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1974 ई.।
7. **मीराबाई (जीवन चरित्र और आलोचना),** लेखक –डॉ. कृष्णदेव उनाटी, चिल्ड्रन सोसाइटी महरौली, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1973 ई.।
8. **मीराबाई की पदावली,** सम्पादक –आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, प्रथम संस्करण 1993 ई.
9. **मीरा की प्रामाणिक पदावली,** सम्पादक – डॉ. भगवानदास तिवारी, साहित्य भवन (प्रा0) लिमिटेड इलाहाबाद, प्रकाशन, द्वितीय संस्करण 1974 ई.।
10. **मीरा सृष्टि और दृष्टि,** लेखक – हौसिला प्रसादसिंह, मूलचन्द एण्ड ब्रदर्स फैजाबाद, प्रकाशन द्वितीय संस्करण 1982 ई.।

11. **मीरा जीवन और काव्य (प्रथम खण्ड काव्य),** लेखक – डॉ सी. एल. प्रभात, राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर, प्रथम संस्करण 1999 ई.।
12. **मीरा जीवन और काव्य (द्वितीय खण्ड काव्य),** लेखक –डॉ सी. एल. प्रभात, राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर, प्रथम संस्करण 1999 ई.।
13. **मीरा एक पुनर्मूल्यांकन,** लेखक – पल्लव, आधार प्रकाशन पंचकुला हरियाणा, प्रथम संस्करण 2007 ई.।
14. **धर्म सम्प्रदाय और मीरा का भक्ति–भाव,** लेखक –डॉ. लाजवन्ती भटनागर, वाणी प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 1980 ई.।
15. **भक्ति रस बोधिनी टीका,** प्रियदास, वि. सं. : 1767–94
16. **हिन्दी साहित्य का इतिहास,** लेखक –आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, प्रकाशक–मलिक एण्ड कम्पनी जयपुर, प्रथम संस्करण 2009 ई.।
17. **हिन्दी साहित्य का इतिहास**, लेखक–डॉ. नगेन्द्र, डॉ सुरेशचन्द्र गुप्त, प्रकाशक मयूर पेपरबैक नोएडा, प्रथम संस्करण 2009 ई.।
18. **मध्यकालीन भारतीय साहित्यिक कवि**, लेखक–महेन्द्र कुमार मिश्रा, राज. पब्लिशिंग हाउस जयपुर, प्रथम संस्करण 2008 ई.।
19. **हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास,** लेखक– डॉ. गणपति **चन्द्र** गुप्त, लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2010 ई.।
20. **हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियां,** लेखक–राजनाथ शर्मा, भारत प्रकाशन मंदिर सुभाष रोड़ अलीगढ, द्वितीय संस्करण 1986 ई.।
21. **हिन्दी साहित्य युग ओर प्रवृतियाँ,** लेखक –डॉ. शिव कुमार शर्मा, अशोक प्रकाशन नई सड़क दिल्ली, अठाहरहवाँ संस्करण 2003 ई.।

22.**मध्यकालीन निर्गुण भक्ति साधना,** लेखक – डॉ. हरवंशलाल शर्मा, वैद्य निकेतन रविन्द्र पुरी वाराणसी, प्रथम संस्करण 1966 ई.।

23.**मध्यकालीन हिन्दी काव्य में समाज,** लेखक – डॉ. गायत्री वैश्य, पब्लिकेशन जयपुर, प्रथम संस्करण 1998 ई.।

24.**भक्ति साहित्य के आधार स्तम्भ,** लेखक – यज्ञदत्त शर्मा, साहित्य प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 2006 ई.।

25.**मध्यकालीन लोकचेतना,** लेखक –डॉ, रवि कुमार 'अनु', संजय प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 1985 ई.।

26.**हिन्दी साहित्य दूसरा इतिहास,** लेखक –डॉ. बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली, पांचवा संस्करण 2008 ई.।

27.**भारतीय संस्कृति के तत्व,** लेखक –डॉ. श्री कृष्ण ओझा, अभिषेक प्रकाशन चौड़ा रास्ता जयपुर, प्रथम संस्करण 2010 ई.।

28.**हिन्दी साहित्य का उद्‌भव और विकास,** लेखक –आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली तैतीसवा संस्करण 2007 ई.।

29.**हिन्दी साहित्य का इतिहास,** लेखक –डॉ. नगेन्द, नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली, तैतीसवा संस्करण 2007 ई.।

30.**चरणदासी संत सहजाबाई और उनका काव्य,** लेखक –देवकरण सिंह, राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर, तैतीसवा संस्करण 2007 ई.।

31.**राजस्थानी लोक गाथा कोश,** लेखक –डॉ. कृष्ण बिहारी सहल, राजस्थान साहित्य संस्थान जोधपुर, तैतीसवा संस्करण 2007 ई.।

32.**पद प्रसंग माला,** लेखक– नागरी दास राजस्थान साहित्य संस्थान जोधपुर, तैतीसवा संस्करण 2007 ई.।

पत्रिकाएँ

1. नागरी प्रचारिणी सभा पत्रिका	भाग 14 अंक 15
2. चांद मारवाडी	अंक 1929 भाग–7
3. सरस्वती जनवरी	1915
4. राजस्थान वर्ष	वि. स. 1922
5. राज. भारती महाराणा कृष्णा विशेषांक	मार्च 1963
6. साहित्य संदेश	मार्च अप्रैल 1946
7. राजस्थान भारती, महाराणा कुम्भा विशेषांक	मार्च 1963
8. हिन्दी विश्व भारती	वर्ष 1942
9. साहित्य सन्देश	मार्च अप्रैल 1946
10. मधुमती	राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर
11. हंस	नई दिल्ली
12. नया ज्ञानोदय	भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली

डॉ. हरप्रकाश गौड़
वरिष्ठ व्याख्याता एवं शोध निर्देशक-हिन्दी
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर